४ फिराक़ की शायरी
('गुले - नग़मा' के सन्दर्भ में)

डॉ. श्रीमती इशरत बी. खान

फिराक़ गोरखपुरी उर्दू-काव्य के प्रमुख हस्ताक्षर हैं। उर्दू में ही नहीं, हिन्दी में भी उनका पाठक-वर्ग बहुत तेज़ी से बढ़ा है। इनकी शायरी में अपने समय का प्रभाव तो दिखाई देता ही है। उनकी शायरी पर एक ओर मीर, ज़ोक़, दाग, नासिख का प्रभाव दिखाई देता है तो दूसरी तरफ कालिदास, टैगोर, बिहारी, सूरदास, कबीर तथा अंग्रेज़ी के शेली, कीट्स, वर्डसवर्थ का प्रभाव भी लक्षित होता है लेकिन फिराक़ की आवाज इनकी अपनी आवाज़ है जो दूर से ही पहचानी जाती है। इस अछूती आवज़ तक पहुँचने के लिए उन्होंने बरसों मेहनत की है। इस सन्दर्भ में फिराक़ स्वयं कहते हैं -

मैंने इस आवज़ को मरमर के पाला है, रूह कायनात, मशाल, रूप फिराक़, शाबिस्तां और गुले - नगमा आदि फिराक़ साहब के चर्चित काव्य-संग्रह हैं। 'गुले - नगमा' को सन १९६१ में 'साहित्य अकादेमी पुरस्कार' तथा १९७० में 'ज्ञानपीठ पुरस्कार मिला। इस संग्रह में गज़ल, कविताएं और मुक्तक शीर्षक के अन्तर्गत रुबाईयाँ संग्रहीत हैं। 'गुले - नगमा' की बेशक़ीमती गज़ले, नज़्मे और रुबाइयॉ भी भुलायी जाने की चीज़े नहीं हैं। बेशक इनके जरिए आपका वास्ता ऐसी शाएरी से होगा जहाँ गहन मानवीय संवेदना और एक उम्र की अनुभूतियाँ हैं।"[१]

यद्यपि फिराक़ साहब ने गज़लों के अतिरिक्त नज़्म, कविताएँ रुबाइयाँ भी लिखी हैं लेकिन वह अपनी गज़लों द्वारा ही याद किये जाते रहेंगे। एक प्रकार से उर्दू में फिराक़ की पहचान गज़ल से ही बनती है। फिराक़ की गज़लों में उन गज़लों का महत्त्वपूर्ण स्थान है जो बड़ी संख्या में सैकड़ो लोगों के पास पहुँचती है। निः सन्देह उनको गज़लें क्लासिक की श्रेणी में आती हैं।

फिराक़ साहब की अधिकतर शायरी, इश्किया शायरी है पर इनकी इश्किया शायरी उर्दू की परम्परागत इश्किया शायरी जैसी नहीं है। अपनी इश्किया शायरी द्वारा फिराक़ ने प्राचीन इश्किया शायरी को प्रेयसी, बेवफा तवायफ के कोठे से नीचे उतारा है। आशिक को आठों पहर के रोने-धोने से मुक्ति दिलाई है। इस सन्दर्भ में फिराक़ साहब का कहना है -

"इश्किया शायरी के लिए सिर्फ आशिक होना और शायर होना काफी नहीं। सिर्फ नेक और रक़ीकुल -कल्ब (कोमल हृदय) होना काफी है। सिर्फ जज़्बाती (भावुक) और सिर्फ माकूल आदमी होना भी काफी नहीं। दाख़िली और ख़ारिजी (आन्तरिक एवं वाह्य) मुआहदा (अवलोकन) भी काफी नहीं। इन गुणों के अलावा पुरे अज़मत (महान) इश्किया शायरी के लिए जरूरी है कि शायर की दर्की (बोध और ज्ञान सम्बन्धी) जमालियाती (अन्तःकरण सम्बन्धी) और इख्लाकी (सदाचार संबंधी) दिलचस्पियॉ वसीह (विस्तृत) हैं। उनकी शख्सियत (व्यक्तित्व) एक वसीह ज़िन्दगी है और वसीह कल्चर भी हामिल (वाहक) हो। उसका दिल भी बड़ा हो और भी बड़ा हो - यानी ऐसे दिल ओ दिमाग कल्चर से रचाया - सजाया हो।"[२]

फिराक़ की गज़लों में प्रेम का एकं उदात्त रूप मिलता है। आशिक, माशूका की आँखों को देखकर ही जीवन की व्याख्या कर बैठता है - शेर इस प्रकार है -

आंखों में जो बात हो गयी है
एक शरहे-हयात हो गयी है।[३]

फिराक़ की इश्किया शायरी में संयोग की अपेक्षा

वियोग को अधिक महत्त्व दिया गया है -

शामे - गम उस निगाहे नाज़ की बातें करो
बेखुदी बढ़ती चली है राज़ की बातें करो।"[४]

गुले-नग़मा में ग़ज़ल के बाद 'कविताएँ' नामक शीर्षक में सत्रह कविताएँ संकलित हैं। इन कविताओं के विषय प्रेम तत्कालीन समाज की स्थिति और मासूम बच्चों से संबंधित हैं। 'शामे - अयादत', 'धरती की करवट' और 'हिंडोला' आदि कविताओं पर विचार किया जाएगा।

'शामे-अयादत' नामक कविता, फिराक़ साहब ने अगस्त १९४२ में इलाहाबाद सिविल अस्पताल से रूग्ण शैय्या पर लेटे-लेटे कही थी। उन दिनों सिविल अस्पताल में बड़े अफसरों का ही प्रवेश हो सकता था। होश में आने के बाद चिन्ताजनक स्थिति में भी आप नज़्म कहने से बाज़ नहीं आए। नज़्म लिखने से पहले अपने एक मित्र से फर्माया -

"साहब कितनी मनहूस फिज़ा इस अस्पताल की है। हर शख्स मुहसिब (सभ्य) बना बिस्तर पर लेटा रहता है। यह साहब लोगों का अस्पताल है न? लेकिन जब से मैं यहाँ आया हूँ, जान पड़ गई है, इस अस्पताल में। अब मालूम हुआ है, यहाँ के स्टाफ को - कोई आदमी आया है, अस्पताल में।"[५]

और वाकी अस्पताल में जान पड़ गई थी। खामोश और पुर सुकून अस्पताल एक पंडाल में बदल गया था।

फिराक़ साहब की प्रेयसी, जिससे साल, छः माह पूर्व हीं प्रेम हुआ था। उन्हें देखने अस्पताल में आई तो फिराक़ साहब के हृदय में जो भावोद्रेक उठे थे, वह उन्होंने इस नज़्म में समोये हैं। कविता के प्रारम्भ में प्रेयसी के रूप का चित्रण करते हैं। नमूने के तौर पर कुछ शेर पेश हैं -

यह कौन मुस्कुराहटों का कारवाँ लिए हुए
शबाबो - शेरो - रंगो - नूर का धुआँ लिए हुए।"[६]
निगाहे - यार दे गई मुझे सकूने-बेकराँ
वो बेकही वफाओं की गवाहियाँ लिए हुए।
फिराक़ आज पिछली रात क्यों न मर रहूँ
कि/अब /हयात" ऐसी शामें,
होगी फिर कहाँ लिए हुए।"[७]

फिराक़ साहब आशिक़ाना और इनकिलाबी दोनों किस्म के शायर हैं। उनके यहाँ एक ही कविता में जहाँ इश्क लहरे मारता हुआ नज़र आता है वहाँ इनकिलाब आग उगलता हुआ भी दिखाई देता है। प्रेयसी की अभी रूप छटा को जी भर देख भी न पाये थे कि उनके हृदय में इस तरह के भाव प्रस्फुटित होने लगे-

मगर नहीं कुछ और मसलहत थी उसके
आने में जमालो - दीदे-यार ये,
नया जहाँ में लिए हुए।
उसी नये जहाँ में आदमी बनेंगे आदमी
जबीं प शहकारे - दहन का निशां लिए हुए।
उसी नये जहाँ में आदमी बनेंगे देवता
तहरातों का फर्के-पाक पर निशाँ लिए हुए।"[८]

इसी प्रकार विचार करते हुए अकस्मात उन्हें ध्यान आता है कि वे अस्पताल में बीमार लेटे हुए हैं। वे सोचते हैं कि यह उनके जीवन की यादगार शाम बन गई है -

नये ज़माने में अगर उदास खुद को पाऊँगा
ये शाम याद करके अपने गम को भूल जाऊँगा।"[९]

अस्पताल में अपनी वेदना से छटपटाते हुए फिराक़ साहब को स्मरण हो आता है कि ये तेरा दुख, तेरे अकेलेपन का नहीं है। यह समस्त विश्व ही वेदना में कराह रहा है। फिराक़ साहब इस समय अपनी वेदना को ही विश्व-वेदना, समझते हैं -

वो जीस्त की कराह जिससे बेक़रार है फ़जा
वो जिन्दगी की आह जिससे
काँप उठती है फ़जा।"[१०]

आगे वे कहते हैं -

क़रीब-तर मैं हो चला हूँ दुख की
काएनात से दुनिया में
मैं अजनबी नहीं रहा हयात से ममात से।

इन्हीं विचारों में डूबे हुए फिराक़ सामने जब प्रेयसी आती है, तब फिर लहककर शामे-अयादत के महबूब से कहने लगते हैं -

हर अदा गोया पयामे - जिन्दगी देती हुई
सुबहे तेरे हुस्न में अँगड़ाइयाँ लेती हुई।
आ गई बहारों की लचक रफ्तार में
मौजे-दरिया का तरन्नुम बस गया रुखसार में।

'हिंडोला' और 'धरती की करवट' नामक कविताओं में फिराक़ अपने भारत के बच्चो और किसानो को नहीं भूलें हैं। 'हिंडोला' कविता ऐतिहासिक-क्रम में भारत की रंगारंग झांकी पेश करते हुए मौजूदा चतुर्दिक पतन पर खत्म होती है। कविता पढ़ने से लगता है कि शायर इन्किलाब के ख़तरों से खूब वाकिफ है, लेकिन वह यह ख़तरा भी मोल लेने को तैयार है -

कि बच्चे कौम की सबसें बड़ी अमानत हैं
हम इन्किलाब के ख़तरों से खूब वाकिफ़ हैं।
कुछ और रोज़ यही रह गये जो लैलो निहार
जो मोल लेना पड़ेगा हमें यह ख़तरा भी।
कि बच्चे क़ौम की सबसे बड़ी अमानत हैं।"[११]

इसी तरह 'धरती की करवट' कविता भी प्रतिशोध की कविता है। इसमें शायर, एक नई दुनिया बनाने के ख्वाब देखता है। यहाँ भी फिराक़ की शायरी का सजीव रूप दर्शनीय हैं -

फिराक़ साहब ने 'रुबाइयाँ' भी लिखी हैं लेकिन गुले-नग़मा की रुबाइयों की शान ही अलग है। इसमें एक औरत को विभिन्न रूपों में चित्रित किया गया हैं। ऐसी ही ममत्व से परिपूर्ण एक झांकी देखिए-

"आँगन में लिये चाँद के टुकड़े को खड़ी
हाथों प झुलाती है उसे गोद भरी।
रह रह के हवा में जो लुका देती है
गूँज उठती है खिलखिलाते बच्चे की हँसी।"[१२]

नयाज़ फतहपुरी ने फिराक़ साहब के विषय में एक बड़ी महत्वपूर्ण बात कही है -

"वह शेर नहीं कहते, जिन्दगी मुहब्बत के निकात पर तबसरा करते हैं - इतना लतीफ और अमीक तबसरा कि शायरी से अलाहदा एक मुस्तकिल लज्जत महसूस होने लगती हैं।"[१३]

उनके अशार दिमाग में एक विशेष झनझनाहट, एक बार फिर लौट आनेवाली आवज - सी छोड़ जाते हैं, जो दिमाग पर इस प्रकार हावी हो जाती है कि प्रारम्भ से अन्त तक के जीवन की गूँज अनुभूत होती है।

फिराक़ की भाषा मे सहज प्रवाह है। उसमें उर्दू अरबी-फारसी एवं खड़ीबोली हिन्दी का प्रयोग किया गया है। इसलिए आपका काव्य, हिन्दी पाठकों के लिए सम्प्रेषणीय है। सांकेतिक शिल्प का सुन्दर प्रयोग किया गया है। 'आँखों' पर ऐसे अनेक शेर लिखे गये हैं। फिराक़ साहब की शायरी में वैचारिकता और विराटता तो मिलती ही है लेकिन इसके साथ ही विश्वव्यापकता का एहसास कराने के लिए उनके शब्दों की गमक का भी बड़ा हिस्सा है।

इस प्रकार फिराक साहब हिन्दी एवं उर्दू पाठकों के बीच हमेशा याद किए जाते रहेंगे।

सन्दर्भ -

१. 'गुले-नगमा' के फ्लैप से
२. फिराक़ : राज्यपाल एण्ड सन्स पृ. १८
३. फिराक़ : गुले-नगमा : पृ. १६ गोरखपुरी
४. रज़ा जाफर :स्वातंत्र्योत्तर : पृ.२९५
५. गोयलीय : शायरी उर्दू शायरी के नये दौर : पृ. ६४
६. फिराक़ गोरखपुरी : गुले-नगमा : २३६
७. वही : पृ. २३५
८. वही : पृ. २३५
९. वही : पृ. २३५
१०. वही : पृ. २४०
११. वही : पृ. २६९
१२. वही : पृ. २६२
१३. गुले-नगमा की भूमिका : पृ. ९

***